OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 2

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-7 जुलाई-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

शांतिवन। अनिलभाई टी. पटेल,अध्यक्ष गणपत युनिवर्सिटी को शिक्षा विभूषण से सम्मानित करते हुए ब्र.कु.सरला,क्षेत्रीय संचालिका,गुजरात, ब्र.कु.करुणा,उपाध्यक्ष मीडिया प्रभाग, ब्र.कु.मृत्युंजय,उपाध्यक्ष शिक्षा प्रभाग।

मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने पर सभी की सहमति।

व्यावहारिक शिक्षा पर ज़ोर देना समय की मांग

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम में मंचासीन ब्र.कु. डॉ. हरीश, प्रो. राधेश्याम शर्मा,कुलपति,सिरसा सीडीएल यूनिवर्सिटी, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, प्रो. एस.रतना कुमारी,कुलपति,तिरूपति श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय, ब्र.कु.शीलू।

ज्ञानसरोवर। समाज में मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए मूल्य आधारित शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की व्यावहारिक शिक्षा पर ज़ोर देना समय और परिस्थितियों की बलवती मांग है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में प्रो. राधेश्याम शर्मा, कुलपति, सिरसा सीडीएल यूनिवर्सिटी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का अर्थ स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर डिग्री प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि लोगों में जनजागृति लाकर उन्हें जीवन का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए। मूल्यों की गिरावट के माहौल में मनुष्य अपनी पहचान कैसे बरकरार रखे इस पर गहन चिंतन की ज़रूरत है।

प्रो. एस.रतना कुमारी,कुलपति,तिरूपति श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय ने कहा कि मूल्यविहीन शिक्षा स्वयं ही अर्थ विहीन हो जाती है।

ब्र.कु. डॉ. निर्मला,निदेशिका, ज्ञानसरोवर ने कहा कि नई पीढ़ी के उत्थान के लिए शिक्षकों को स्वयं में मूल्यों का समावेश करने के साथ निजी व सामूहिक तौर पर चिंतन करने की ज़रूरत है। समाज में दिखाई देती विसंगतियों को दूर करने के लिए वृहत स्तर पर जनजागृति -**शेष पेज 8 पर...**

भौतिकवादिता ने मनुष्य की सुख, शान्ति छीन ली- ब्र.कु.मीना

हरिद्वार। हर व्यक्ति अपने जीवन में सुख, शान्ति, आनंद, समृद्धि और स्वास्थ्य चाहता है। उनका ऐसा सोचना एवं चाहना स्वाभाविक भी है क्योंकि यह सब कुछ जीवात्मा के मूल गुण हैं परन्तु विडम्बना यह है कि सबकुछ चाहते हुए भी अधिकांश लोग अशांत और तनावयुक्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं क्योंकि पूजीवादिता, भौतिकवादिता ने मनुष्य की सुख, शान्ति और सन्तुष्टता छीन ली है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना द्वारा खुशनुमा जीवन जीने की कला' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. मीना ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि साधन सम्पन्न लोग भी मानसिक तनाव से पीड़ित हैं और यह मानसिक तनाव जब चरम सीमा पर पहुंच जाता है तब यह मानसिक तनाव हमारी शारीरिक पद्धतियों की आंतरिक रचना एवं कार्यप्रणाली को प्रभावित करके अनेक प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक रोगों को जन्म देता है।

उन्होंने आगे कहा कि तनाव से छुटकारा पाना बहुत ज़रूरी है क्योंकि चिंता तो व्यक्ति को हर समय जलाती रहती है। इसका समाधान भी व्यक्ति को निहित कारणों के निराकरण से ही करना है। इसके लिए हम एकान्त में बैठकर अंतर्मुखी बन अपनी समस्या पर विचार करें। कुछ समस्यायें व घटनायें ऐसी होती हैं जो प्रयास करने से, आपसी बातचीत और दूसरों के सहयोग से हल हो जाती हैं। इसके विपरीत कुछ घटनायें ऐसी घट जाती हैं जिनका भरसक प्रयास करने पर भी कोई हल नहीं निकलता। ऐसी परिस्थिति में ना तो भागना है, ना ही घुटने टेकने हैं और ना ही घबराना है। केवल शुद्ध विचार, सही दृष्टिकोण द्वारा स्व-परिवर्तन से ही हम तनावमुक्त जीवन की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

अध्यात्महीन - शेष पेज 6 पर...

हरिद्वार। डॉ. आदित्य नारायण पाण्डेय,प्रधानाचार्य,राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज,गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, ब्र.कु.मीना, महामण्डलेश्वर स्वामी आनंद चेतन जी महाराज,अध्यक्ष,आनंद कृष्णधाम कनखल।

मनुष्य खुद कर्मों के ज़िम्मेवार-शिवानी

वलसाड। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रंजन, ब्र.कु.शिवानी, मेयर सोनल सोलंकी, ब्र.कु. रोहित तथा विधायक भरत पटेल।

वलसाड। इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है क्या वह भगवान की ही मर्ज़ी से हो रहा है? क्या आप यहाँ आए हैं वह भगवान की मर्ज़ी से आए हैं? नहीं। हमारे कर्मों के ज़िम्मेवार हम खुद हैं, इसलिए हमें श्रेष्ठ कर्म करते हुए लोगों की दुआएँ कमानी हैं, न कि धन। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'कर्म और भाग्य' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में जनसभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि -शेष पेज 8 पर...